अनुवाद का स्वरूप एवं महत्व

प्रा. डॉ.एस.एस. कदम
(हिंदी विभाग)
शंकरराव जावळे–पाटील महाविद्यालय लोहारा
ता. लोहारा, जि. उस्मानाबाद

अनुवाद, आधुनिक युग की अनिवार्य आवश्यकता है भारत म अनेक भाषाएँ तथा बोलियॉ बोली जाती है। ऐसी स्थिती में अनुवाद भारतीय एकता की दृष्टी से महत्वपूर्ण है। अनुवाद का अर्थ पुनः कथन है। अनुवाद शब्द 'वद' धातू से निर्मित है – जिसका अर्थ है कहना और वाद के साथ 'अनु' उपसर्ग लगता है तो शब्द बनता है 'अनुवाद'। का सरल अर्थ हुआ किसी के कहने के बाद कहना योन पुनःकथन।

अनुवाद एक भाषा में किसी के द्वारा कथित बात का दूसरी भाषा में पुनःकथन ही है। अनेक विद्वानों ने उसे परिभाषित किया है। सेम्युअल जानसन के अनुसार, ''मूल के भावों की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में बदलना अनुवाद है।'' ''डॉ.एन.ई. विश्वनाथ अय्यर – अनुवाद प्रक्रिया में लक्ष्यभाषा में स्त्रोतभाषा के तत्वों को घुलमिल जानें में मानते हैं। डॉ. सतीष रोहरा अनुवाद को ऑपरेशन मानते है कि जिसमें एक भाषा की दूसरी भाषा में पाठ्य सामग्री प्रतिस्थापित की जाती है। उपयुक्ति परिभाषाओं से स्पष्ट है कि अनुवाद में दो भाषाओं की अनिवार्यता है। अनुदित पाठ मूल का सहपाठ हो जाता है। इसलिए ही एलेक्झांडर पोप अनुवाद में मूल चेतना को महत्व देते है। एलेक्झांडर फ़ेजर अनुवाद में मूल का संपूर्ण भाव मूल की शैली, मूल की शैली, मूल की सहजता को प्रमुख मानते है।

निश्चित रुप से उपर्युक्त विद्वानों का अनुवाद चिंतन गहन है। हन परिभाषाओं आधार अनुवाद की परिभाषाहोगी कि, ''एक भाषा में व्याप्त भावों या विचारों को दूसरी भाषा में समतूल्यता के आधार पर सहज रुप में अभिव्यक्त करना अनुवाद है।''

हिंदी में अनुवाद शब्द संस्कृत से आया है। तो कुछ विद्ववान आधुनिक अर्थ में अनुवाद शब्द अंग्रेजी शब्द Translation का रुपांतर मानते हैं। जिसका अर्थ है, 'पार ले जाना'। अनुवाद के संदर्भ में एक भाषा के कथ्य को दूसरी भाषा में 'पार ले जाना' होता है।

एक भाषा में कही गई बात, कथ्य और शैली दोनों स्तरों पर दूसरी भाषा में शत–प्रतिशत उतारना अत्यंत कठीन नही तों असंभव है। अनुवाद करते समय कथन और कथ्य में सुक्ष्म अंतर आ ही जाता है। इस स्थिती में समतूल्यता मुश्किल है। जब–जब स्त्रोतभाषा के रचयिता के विचार एवं अनुभूति लक्ष्यभाषा के पाठक ज्यों की त्यों अनुभव करें, समझे तब सफल अनुवाद होता है।

अर्थ और कथन का रुपांतर जितना सरल लगता है उतना है नहीं। कारण अनुवाद प्रक्रिया में दो भाषाएँ जुड़ी हुई है और हर भाषा की अपनी प्रकृति एवं प्रवृत्तियॉ होती हैं। फिर वह ध्वन्यात्मक, रुपात्मक, शब्दात्मक, पदात्मक हो या फिर सांस्कृतिक या सामजिक हो इन सबका स्त्रोतभाषा से लक्ष्यभाषा में अंतरण होना असंभव है। अनुवाद निर्धारण के लिए समतूल्यता की दृष्टी से अर्थ एवं शैली आवश्यक है परंतु बाध भी है। समतूल्य की बात इतनी सरल नही है। जैसे 'अक्षत' शब्द पवित्रता एवं मांगल्य का प्रतिक है जिसका अंग्रेजी में अनुवाद Rice होता है। यहॉ शब्दानुवाद हुआ पर भावानुवाद नही हुआ। समतूल्यता के कारण अक्षत का मांगल्य शब्द में नही आ पाया। कभी–कभी तो मूल पाठ कें लक्ष्यभाषा में प्रतिशब्द भी नहीं मिलते। जैसे मॉग भरना। ऐसी स्थिती में सांकेतिक या निकटतम शब्दों में बात स्पष्ट करनी पड़ती है। समतूल्य की अभिव्यक्ती काव्यानुवाद में बाधा उत्पन्न करती है। कवि की प्रतिभा अनुवाद में उतारना कठिन है। कभी–कभी अर्थ संकोच – या अर्थ विस्तार भी हो जाना है। प्रत्येक शब्द का अर्थ परिस्थिती एवं प्रसंग के आधार पर ध्वनित होता है। जैसेः अमेरिकी ॲंग्रेजी में 'Corn' शब्द मक्का के लिए प्रयुक्त होता है, और ब्रिटिश भारतीय अंग्रेजी में 'अनाज' का अर्थ देता है।

शब्दानुवाद में स्त्रोतभाषा को लक्ष्य भाषा के व्याकरणिक रुप में रखना महत्वपूर्ण है। पारिभाषिक शब्दावली, विधिएवं शैक्षणिक क्षेत्र में शाब्दि अनुवाद का विशेष महत्व है। इसमें उचित शब्द भंडार संग्रह अनिवार्य है। या तो फिर स्त्रोत भाषा के शब्दों को सही ढंग से लक्ष्य भाषा में अवतरित कर देना चाहिए। जैसे–'Blind Galley' का अनुवाद 'अंधी गली' नही 'बंद गली' किया जाना चाहिए। इसी प्रकार Two meals a day का अनुवाद 'एक दिन में दा भोजन' नही तो 'दो वक्त का खाना' किया जाता है। अनुवाद परंपरा में कुछ शब्दों के अनुवाद निश्चित है – जैसे Engine का अनुवाद 'धुऑकस' नही तो Engine निश्चित हो गया है। शाब्दिक अनुवाद प्रक्रिया में कुछ शब्द अंग्रेजी से हिंदी में और हिंदी से अंग्रेजी में आ

गये जैसे– पत्तल Dining, Leaf रथयात्रा, Carfestival गोधूली–Cowdust Hour।

भावानुवाद में भाव प्रधान होते है। संसार के समस्त प्राणियों की तरह मनुष्य भी भावों द्वारा अपने आपको व्यक्त करता है। शब्द उसके भावों के वाहक होते है। भावानुवाद में शब्दों से अधिक भावों का महत्व होता है। यहॉ अनुवाद अपनी मौलिकता का उपयोग करता है। मौलिकता की अति न हो इसलिए कि अनुदित कृति अनुदित कृति न होकर मौलिक कृति बन जाए। अनुवाद स्वरुप कैसा भी हो। उसे मूल से हटाना नही चाहिए। उदा. Gold शब्द का अर्थ है सोना और Golden शब्द का अर्थ है सुनहरा। पर अनुवाद में Golden Jublee–स्वर्ण जयंती, Golden Chance– सुनहरा अवसर, Golden Success– शानदार सफलता।

हिंदी में कई उदाहरण है जिनका सटिक भावानुवाद अपेक्षित है, नही तो अर्थ गलत होता है। जैसे–

मूल शब्द

	शब्दानुवाद	**भावानुवाद**
1.	Hunger Strike	भूख हडताल अनशन
2.	White Ant	सफेद चिंटी दीमक

उचित भावानुवाद पाठकों के हृदय एवं मस्तिष्क को गहराई से प्रभावित कर सकता है। काव्यानुवाद में अधिकतक निकट अनुवाद संभव है।

अर्थ, शब्द और ध्वनि का योग कविता है। लक्ष्यभाषा में उसे अवतरीत करना बहुत कठिन है। उदा. हिंदी को 'अर्धांगिनी' शब्द जिसमें पत्नी का अर्थ के साथ एक श्रद्धा भाव भी है। अंग्रेजी का बेटरहाफ शब्द 'अर्धांगिनी' में जो श्रद्धाभाव है वह 'बेटराफ' में नही हैं। कहने का तात्पर्य कि, प्रत्येक शब्द अर्थवक्ता के स्तर पर अपने सामाजिक, सांसकृतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से जुड़ा हुआ होता है। जिसका शाब्दिक अनुवाद संभव है पर सामाजिक, सांसकृतिक, बातों का अनुवाद एक प्रश्न चिन्ह है। हॉ पर यह भी सच है कि छंदबध्दता का पालन किए बिना भी श्रेष्ठ कोटि का अनुवाद किया जा सकता है। उदा. रविंद्रनाथ टागोर की 'गीतांजली' का अंग्रेजी अनुवाद गद्य में है लेकिन ध्यान रहे कि इसी गद्य अनुवाद ने उन्हें नोबेल पुरस्कार दिलाया है।

दूसरा उदाहरण 'कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय' में एक कनक का सोना है तो दूसरा कनक धतूरा है। लक्ष्यभाषा में सोना और धतूरा दोनो अर्थ रखनेवाला शब्द मिलना कठिन है। उसी प्रकार 'उल्लू है' इसमें मूर्खता का भाव है पर उसका अंग्रेजी अनुवाद Owl करें तो बात बिगड जाएगी। कारण इंग्लंड में 'उल्लू' मूर्खता का नही तो अकलमंदी का प्रतीक है।

नाट्यानुवाद में रंगमंचीय दृष्टि से नाटक का अनुवाद सक्षम होना चाहिए। नाट्य में संवाद प्राण होते है। उनका अनुवाद करते समय लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुसार करना चाहिए। जैसे–तुम्हारी मातृभाषा कौन सी है? जिसका जबाब 'मेरी मातृभाषा मराठी है। पर यहॉ केवल 'मराठी' शब्द का उच्चारण करने से भी काम बन सकता है।

इसी प्रकार लोकोक्तियॉ और मुहावरों के भी अनुवाद करते समय शब्द और अर्थ की दृष्टि से समान लोकोक्तिया, मुहावरों का मिलना कठिन है। जैसे– गधे को जाफरन की क्या कद्र? (हिंदी) गाढ़वाला गुळाची चव काय? (मराठी) यहॉ पर शब्द और अर्थ में समानता है। केवल जाफरन की जगह 'गुड' शब्द आया है। समान शब्द और अर्थ की पूर्ण समानता न मिले तो कम से कम समान भाव का प्रयोग होना चाहिए।

मराठी में 'पायाला मुंग्या येणे' का अर्थ है पैरों झुन–झुन होना इसके लिए एक मुहावरा प्रचलित है। 'पाय जड़ होंगे। इसका शब्दशः हिंदी अनुवाद 'पैर भारी होना' सीधे गर्भवती होने का संकेत देता है। यहॉ मराठी मुहावरे का हिंदी अनुवाद मराठी अर्थ से कोसो दूर है। याने अनुवाद करते समय इस भयंकरता से अनुवादक को बचना चाहिए। इसी प्रकार जिस पत्रल में खाया उसे में छेद करना जैसे मुहावरे का अंग्रेजी पर्याय नही है। पत्रल का डाईनिंग लीफ अनुवाद ठीक नही है। अनुवाद प्रकिया में इससे बचना चाहिए।

विज्ञापन के अनुवाद में भावानुवाद या शब्दानुवाद से परे मिश्रित भाषा का प्रयोग किया जाता है। कई बार लक्ष्यभाषा की प्रकृति देखकर अनुवाद का रुप निर्माण किया जाता है। जैसे– 'थम्स अप का अंग्रेजी विज्ञापन टेस्ट दि थंडर।' इसका अनुवाद कठिन है। कारण इसमें संगीतात्मकता है। इसलिए इसका अनुवाद तुफानी ठंडा कर लिया है। जिसमें मुल और अनुवाद का थोडा भी साम्य नही पर लय औश्र भाव के कारण अनुवाद सफल बन गया।

शीर्षक के अनुवाद में भी प्रभाव को सर्वाधिक महत्व देना चाहिए। शीर्षक में यथावत अनुवाद अर्थ भिन्नता न्यत्पन्न कर सकता है। भोलानाथ तिवारी उदा–देते है। Around the World का यथावत अनुवाद दुनिया के आसपास जो सही प्रतीत नही होता तो 'दुनिया की सौर' बिल्कुल सही प्रतीत होता है। इसी प्रकार मौलाना आझाद की पुस्तक है–India wins freedom जिसका हिंदी अनुवाद 'स्वतंत्रता की कथा' सही होगा परंतु उनकी लेखन प्रकृति उर्दुनिष्ठ है। अतः इसका उर्दुनिष्ठ अनुवाद आजादी की कहानी सही होगा।

बिंबो के अनुवाद में सतर्कता होनी चाहिए। जैसे–If winner comes, can spring befar behindइसका शब्दानुवाद से काम नही चलेगा कारण शब्दानुवाद है। जब ठंड का मौसम आता है तो क्या वसंत का मौसम नही आयेगा? यहॉ अभिधार्थ से ध्वन्यार्थ बिंब प्रभावित बनेगा ऐसा अनुवाद ठीक होगा। जैसे– 'दुख आता है' तो सुख भी आयेगा।

मिथको में संदर्भ तथा संबंधित कथा का महत्व स्वंय सिध्द होता है। मिथकों के अनुवाद में भी एक विशेष ध्यान में रखना पड़ता है। कारण मिथकों का अनुवाद लक्ष्यभाषा के प्रतिकुल सिध्द होता है।

अनुवाद अपन आप में कला भी है और शिल्प भी है। अनुवाद के द्वारा हम दूसरे देश के साहित्य के साथ–साथ प्रशासकिय, शैक्षणिक, वैज्ञानिक, धार्मिक आदि के अत्यंत नजदीक आ रहे है ग्लोबल युग में हम सब प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रुप से अनुवाद से काम करते ही है। जब हम कोई दूसरी भाषा बालते है तब म नही मन उसका अनुवाद करते है फिर बोलते है। यहॉ अनुवाद का मौखिक क्षेत्र है। समाचार पत्र, व्यापार कार्यालय, बॅक, न्यायालय में भी अनुवाद की अत्यंत आवश्यकता होती है। वैज्ञानिक दृष्टि से देशों का ज्ञान, तकनीकी विज्ञान आदि अनुवाद द्वारा हम प्राप्त कर सकते है। विधि और न्याय के क्षेत्र में भी अनुवाद अनिवार्य है। कोई मुकदमा निचले न्यायालय से उच्च न्यायालय में चला जाता है तो प्रादेशिक भाषा से अंग्रेजी में अनुवाद करना पड़ता है। शिक्षा में अनुवाद अत्यंत महत्वपूर्ण है। आजकल उच्च शिक्षा का माध्यम हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को बनाया जात रहा है। पर उच्च शिक्षा से संबंधित ग्रंथ अंग्रेजी में है या अन्य विदेशी भाषाओं में। ऐसी स्थिती में अनुवाद ज्ञान–विज्ञान के द्वार तक पहुॅचा सकता ही नही तो मील का पत्थर साबित होता है। भारतीय संस्कृति की जानकारी विदेशियों से अनुवाद द्वारा ही मिल सकती है। इतना ही नही तो संचार माध्यम याने समाचार पत्र, रेडिओ, दूरदर्शन में भी अनुवाद अनिवार्य है। विदेशी समाचार भारतीय भाषाओं में अनुवादित होकर हम तक पहुॅचते है। दूरदर्शन का कोई लोकप्रिय धारावाहिक प्रादेशिक एवं हिंदी भाषाओं में अनुवाद करके प्रसारित किया जाता है। इसी प्रकार डिस्कव्हरी चैनल, नॅशनल जिओग्रोफी चैनलद्वारा हमे सूक्ष्म जानकारी पलभर में अनुवाद द्वारा ही प्राप्त होती है। आंतरराष्टीय सभा, संमेलन एवं परिषदों में संवाद, अनुवाद के बिना पूरा हो ही नही सकता। भारतीय संसद में तो माखिक अनुवाद होता है। इसके साथ ही संसंद में दिए जानेवाले दस्तावेज पहले अंग्रेजी में तैयार किए जाते हैं और संसद में नियमानुसार हिंदी में ही प्रस्तुत किए जाते है। शासन प्रशासन में भी केंद्र और राज्य सरकारों में हिंदी अनुवाद बिना कामकाज पूर्ण नही होता। पर्यटन क्षेत्र में भी अनुवाद का अपना स्थान है। सफर के दौरान भाषा सीख नही सकते। तो सबसे अच्छा उपाय अनुवाद ही है। अनुवाद द्वारा हम सफर का मज़ा, ज्ञान आदि प्राप्त करते है। विदेशी संस्कृतियों के अदान–प्रदान के लिए भी अनुवाद अनिवार्य है। धर्म की भाषा का आंतरराष्टीय भाषा एवं राज भाषा से कोई संबंध नही होता। हिंदू धर्म की भाषा संस्कृत, बौध्द धर्म की भाषा पालि है। किसी हिंदू को पाली का ज्ञान होगा ही मालूम नही या किसी अंग्रेजी व्यक्ति को संस्कृत का ज्ञान होगा ही संभव नही इतना ही नही तो हिंदू व्यक्ति को ही संस्कृत की जानकारी होगी कहा नही जा सकता। इसी प्रकार मुसलमान अरबी जानता भी होगा या नहीं ऐसे समय धार्मिक प्रार्थना हटने से बचने के लिए सभी धर्मानुयायी उसका भावार्थ जानना चाहते है। तब अनुवाद ही धर्म भावार्थ समझा सकता है। धर्म प्रचार में भी अनुवाद महत्वपूर्ण भुमिका अदा करता है। भारतीय दर्शन संबंधी 'श्रीमद्भागवत' का विश्व की सभी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। वैसे दर्शन अपने आप में श्रेष्ठ तो है ही फिर भी अनुवाद के कारण वह विश्व के कोने–कोने तक पहुॅच गया है। नोबेल एवं ज्ञानपीठ पुरस्कर्ताओं की कृतियॉ अनुवाद के माध्यम से विश्व तक पहुॅच पाती है। तुलनात्मक अनुवाद में भी अनुवाद का अपना स्थान है।

संदर्भसंकेत

1. वैश्वीकरण और हिंदी मानकीकरण–डॉ. हणमंतराव पाटील पृ. 20
2. वैश्वीकरण और हिंदी मानकीकरण–डॉ. हणमंतराव पाटील पृ. 22
3. अनुवाद – कला – श्री चारुदेव शास्त्री